



Aarushi

20 Jun 2020

08:30 PM

Daltenganj

Model: Web-MyKundli

Order No: 121893501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 20/06/2020
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 20:30:00 घंटे
इष्ट _____: 38:27:52 घटी
स्थान _____: Daltenganj
राज्य _____: Jharkhand
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:02:00 उत्तर
रेखांश _____: 84:04:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:06:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 20:36:16 घंटे
वेलान्तर _____: -00:01:38 घंटे
साम्पातिक काल _____: 14:33:24 घंटे
सूर्योदय _____: 05:06:51 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:43:50 घंटे
दिनमान _____: 13:36:59 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 05:35:39 मिथुन
लग्न के अंश _____: 02:24:39 मकर

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मकर - शनि
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: मृगशिरा - 2
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: गण्ड
करण _____: चतुष्पाद
गण _____: देव
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: वो-वोहिनी
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मिथुन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1942	ज्येष्ठ	30
पंजाबी	संवत : 2077	आषाढ़	7
बंगाली	सन् : 1427	आषाढ़	6
तमिल	संवत : 2077	आनी	6
केरल	कोल्लम : 1195	मिथुनम	6
नेपाली	संवत : 2077	आषाढ़	6
चैत्रादि	संवत : 2077	आषाढ़	कृष्ण 14
कार्तिकादि	संवत : 2077	ज्येष्ठ	कृष्ण 14

पंचांग

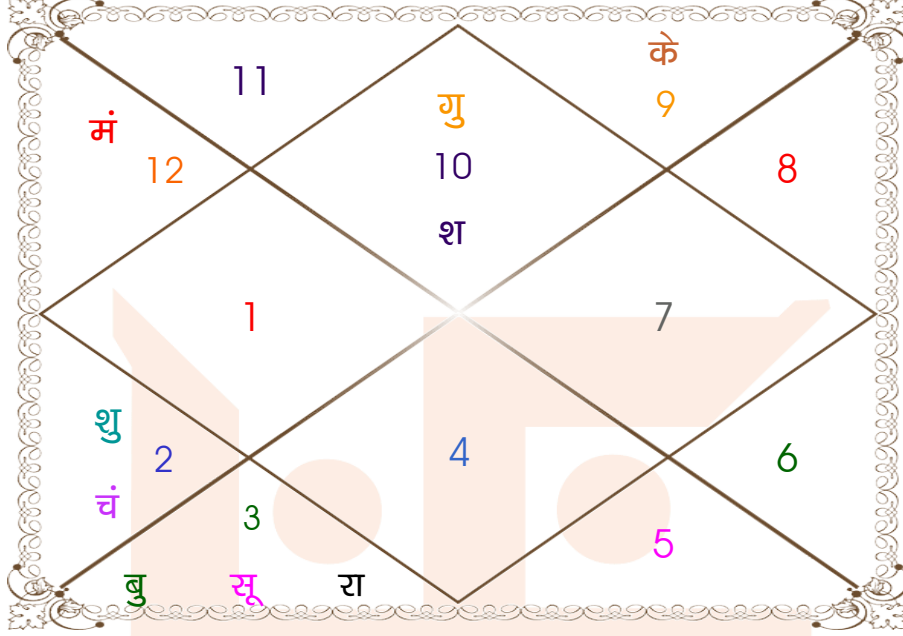
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 14
तिथि समाप्ति काल _____ : 11:52:21
जन्म तिथि _____ : 15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : रोहिणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 12:01:41 घंटे
जन्म योग _____ : मृगशिरा
सूर्योदय कालीन योग _____ : शूल
योग समाप्ति काल _____ : 14:30:28 घंटे
जन्म योग _____ : गण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____ : शकुनि
करण समाप्ति काल _____ : 11:52:21 घंटे
जन्म करण _____ : चतुष्पाद
भयात _____ : 21:10:48
भभोग _____ : 62:28:52
भोग्य दशा काल _____ : मंगल 4 वर्ष 7 मा 21 दि

घात चक्र

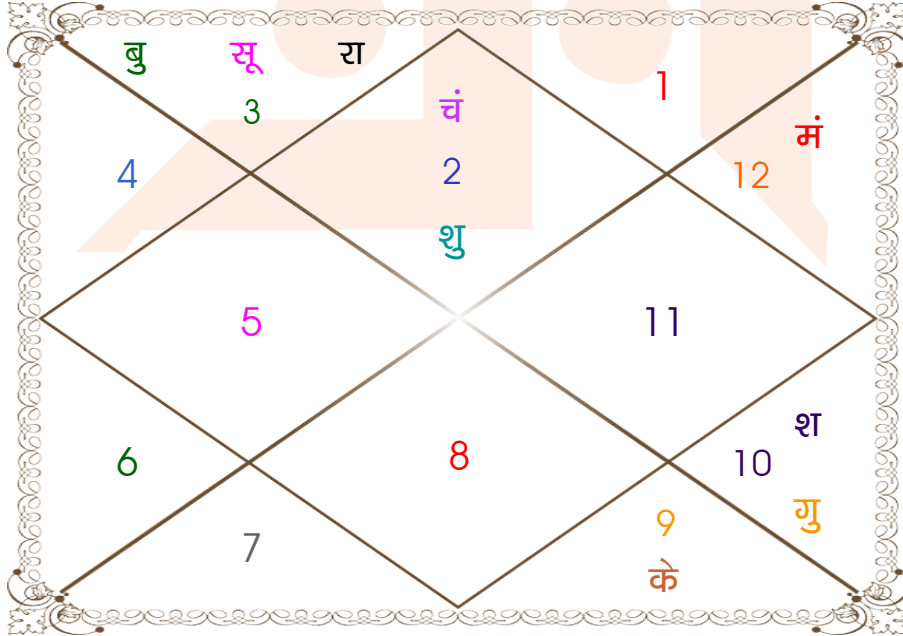
मास _____ : मार्गशीर्ष
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : हस्त
योग _____ : शुक्ल
करण _____ : शकुनि
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : सिंह
लग्न _____ : वृष
सूर्य _____ : वृश्चिक
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : धनु
बुध _____ : कन्या
गुरु _____ : मकर
शुक्र _____ : मकर
शनि _____ : तुला
राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

मं		शु चं	रा सू बु
श ल गु			
के			

लग्न कुंडली

शु चं		मं
रा बु सू		
		श ल गु
		के

विंशोत्तरी
मंगल 4वर्ष 7मा 21दि
मंगल

20/06/2020

12/02/2138

मंगल	10/02/2025
राहु	11/02/2043
गुरु	11/02/2059
शनि	11/02/2078
बुध	11/02/2095
केतु	12/02/2102
शुक्र	12/02/2122
सूर्य	12/02/2128
चन्द्र	12/02/2138

योगिनी
संकटा 5वर्ष 3मा 20दि
मंगला

11/10/2025

11/10/2026

मंगला	21/10/2025
पिंगला	10/11/2025
धान्या	10/12/2025
भ्रामरी	20/01/2026
भद्रिका	12/03/2026
उल्का	12/05/2026
सिद्धा	22/07/2026
संकटा	11/10/2026

Astro barkha Kumari IIMT University Meerut

Ambika enclave ranchi

9304305446

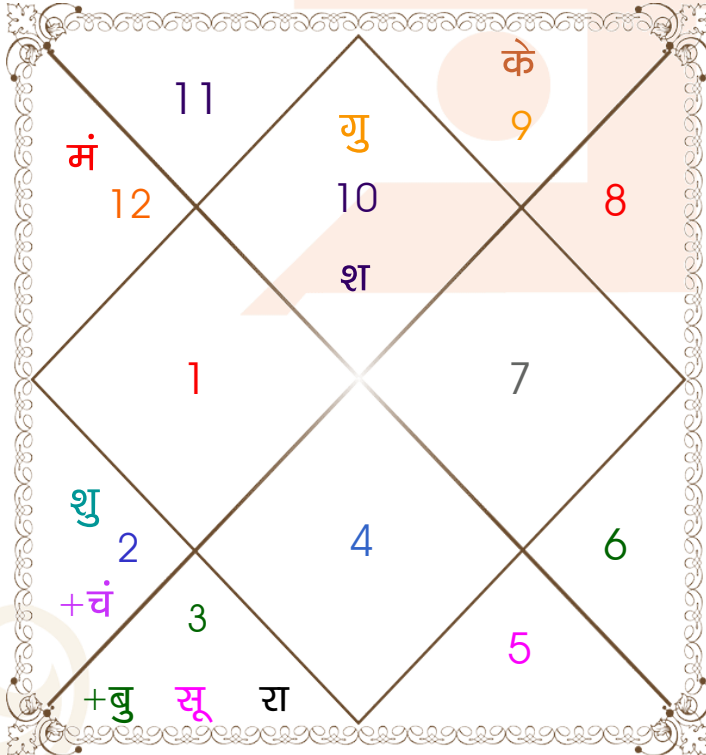
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न		मक	02:24:39	379:38:40	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	---
सूर्य		मिथु	05:35:39	00:57:17	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	चंद्र	सम राशि
चंद्र		वृष	27:49:20	12:45:40	मृगशिरा	2	5	शुक्र	मंगल	गुरु	मूलत्रिकोण
मंगल		मीन	01:15:58	00:37:38	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	मंगल	मित्र राशि
बुध	व	मिथु	20:24:32	00:10:40	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	गुरु	स्वराशि
गुरु	व	मक	01:03:03	00:06:14	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	नीच राशि
शुक्र	व	वृष	11:37:22	00:11:01	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	मंगल	स्वराशि
शनि	व	मक	06:34:28	00:03:27	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	स्वराशि
राहु		मिथु	04:59:02	00:00:00	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	सूर्य	उच्च राशि
केतु		धनु	04:59:02	00:00:00	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	उच्च राशि
हर्ष		मेष	15:19:45	00:02:29	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	---
नेप		कुंभ	26:49:12	00:00:05	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	---
प्लूटो	व	मक	00:11:08	00:01:17	उत्तराषाढा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	---
दशम भाव		तुला	16:37:53	--	स्वाति	--	15	शुक्र	राहु	शुक्र	--

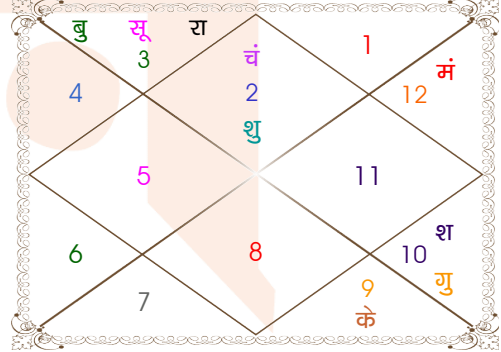
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:08:17

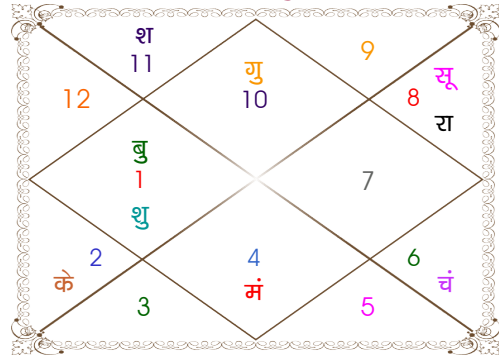
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 19:46:51	मकर 02:24:39
2	मकर 19:46:51	कुम्भ 07:09:03
3	कुम्भ 24:31:16	मीन 11:53:28
4	मीन 29:15:41	मेष 16:37:53
5	मेष 29:15:41	वृष 11:53:28
6	वृष 24:31:16	मिथुन 07:09:03
7	मिथुन 19:46:51	कर्क 02:24:39
8	कर्क 19:46:51	सिंह 07:09:03
9	सिंह 24:31:16	कन्या 11:53:28
10	कन्या 29:15:41	तुला 16:37:53
11	तुला 29:15:41	वृश्चिक 11:53:28
12	वृश्चिक 24:31:16	धनु 07:09:03

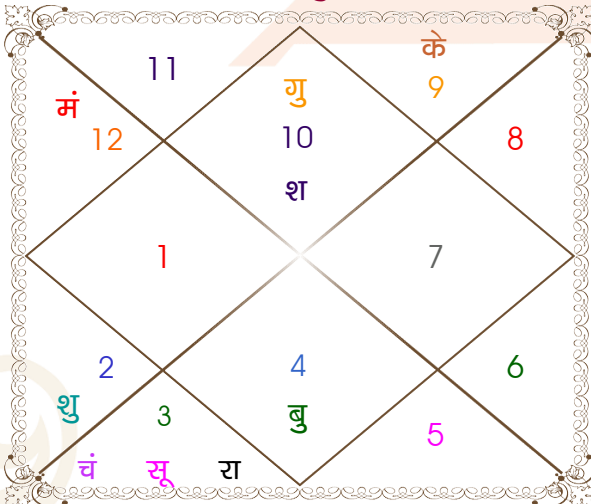
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	02:24:39
2	कुम्भ	09:11:12
3	मीन	15:34:12
4	मेष	16:37:53
5	वृष	12:41:00
6	मिथुन	06:42:10
7	कर्क	02:24:39
8	सिंह	09:11:12
9	कन्या	15:34:12
10	तुला	16:37:53
11	वृश्चिक	12:41:00
12	धनु	06:42:10

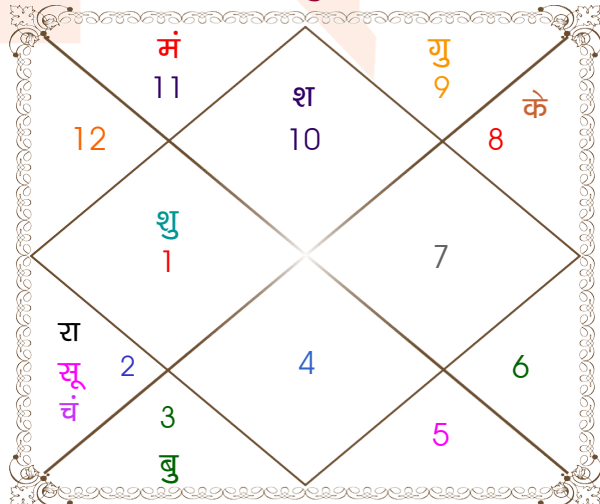
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 4 वर्ष 7 मास 21 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
20/06/2020	10/02/2025	11/02/2043	11/02/2059	11/02/2078
10/02/2025	11/02/2043	11/02/2059	11/02/2078	11/02/2095
00/00/0000	राहु 24/10/2027	गुरु 31/03/2045	शनि 14/02/2062	बुध 09/07/2080
20/06/2020	गुरु 19/03/2030	शनि 12/10/2047	बुध 24/10/2064	केतु 06/07/2081
गुरु 03/07/2020	शनि 23/01/2033	बुध 17/01/2050	केतु 03/12/2065	शुक्र 06/05/2084
शनि 12/08/2021	बुध 12/08/2035	केतु 24/12/2050	शुक्र 01/02/2069	सूर्य 13/03/2085
बुध 09/08/2022	केतु 30/08/2036	शुक्र 24/08/2053	सूर्य 14/01/2070	चंद्र 12/08/2086
केतु 05/01/2023	शुक्र 31/08/2039	सूर्य 12/06/2054	चंद्र 15/08/2071	मंगल 09/08/2087
शुक्र 06/03/2024	सूर्य 24/07/2040	चंद्र 12/10/2055	मंगल 23/09/2072	राहु 26/02/2090
सूर्य 12/07/2024	चंद्र 23/01/2042	मंगल 17/09/2056	राहु 31/07/2075	गुरु 03/06/2092
चंद्र 10/02/2025	मंगल 11/02/2043	राहु 11/02/2059	गुरु 11/02/2078	शनि 11/02/2095

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
11/02/2095	12/02/2102	12/02/2122	12/02/2128	12/02/2138
12/02/2102	12/02/2122	12/02/2128	12/02/2138	00/00/0000
केतु 10/07/2095	शुक्र 13/06/2105	सूर्य 01/06/2122	चंद्र 12/12/2128	मंगल 11/07/2138
शुक्र 08/09/2096	सूर्य 13/06/2106	चंद्र 01/12/2122	मंगल 14/07/2129	राहु 29/07/2139
सूर्य 14/01/2097	चंद्र 12/02/2108	मंगल 08/04/2123	राहु 12/01/2131	गुरु 21/06/2140
चंद्र 15/08/2097	मंगल 13/04/2109	राहु 01/03/2124	गुरु 13/05/2132	00/00/0000
मंगल 11/01/2098	राहु 13/04/2112	गुरु 19/12/2124	शनि 13/12/2133	00/00/0000
राहु 30/01/2099	गुरु 13/12/2114	शनि 01/12/2125	बुध 14/05/2135	00/00/0000
गुरु 06/01/2100	शनि 12/02/2118	बुध 07/10/2126	केतु 13/12/2135	00/00/0000
शनि 14/02/2101	बुध 12/12/2120	केतु 12/02/2127	शुक्र 13/08/2137	00/00/0000
बुध 12/02/2102	केतु 12/02/2122	शुक्र 12/02/2128	सूर्य 12/02/2138	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 4 वर्ष 7 मा 16 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु 10/02/2025 24/10/2027	राहु - गुरु 24/10/2027 19/03/2030	राहु - शनि 19/03/2030 23/01/2033	राहु - बुध 23/01/2033 12/08/2035	राहु - केतु 12/08/2035 30/08/2036
राहु 08/07/2025 गुरु 17/11/2025 शनि 22/04/2026 बुध 09/09/2026 केतु 05/11/2026 शुक्र 18/04/2027 सूर्य 07/06/2027 चंद्र 28/08/2027 मंगल 24/10/2027	गुरु 18/02/2028 शनि 06/07/2028 बुध 07/11/2028 केतु 28/12/2028 शुक्र 24/05/2029 सूर्य 06/07/2029 चंद्र 17/09/2029 मंगल 08/11/2029 राहु 19/03/2030	शनि 31/08/2030 बुध 25/01/2031 केतु 27/03/2031 शुक्र 17/09/2031 सूर्य 08/11/2031 चंद्र 02/02/2032 मंगल 03/04/2032 राहु 06/09/2032 गुरु 23/01/2033	बुध 04/06/2033 केतु 28/07/2033 शुक्र 31/12/2033 सूर्य 15/02/2034 चंद्र 04/05/2034 मंगल 27/06/2034 राहु 14/11/2034 गुरु 18/03/2035 शनि 12/08/2035	केतु 04/09/2035 शुक्र 07/11/2035 सूर्य 26/11/2035 चंद्र 28/12/2035 मंगल 19/01/2036 राहु 17/03/2036 गुरु 07/05/2036 शनि 07/07/2036 बुध 30/08/2036
राहु - शुक्र 30/08/2036 31/08/2039	राहु - सूर्य 31/08/2039 24/07/2040	राहु - चंद्र 24/07/2040 23/01/2042	राहु - मंगल 23/01/2042 11/02/2043	गुरु - गुरु 11/02/2043 31/03/2045
शुक्र 01/03/2037 सूर्य 24/04/2037 चंद्र 25/07/2037 मंगल 27/09/2037 राहु 10/03/2038 गुरु 03/08/2038 शनि 24/01/2039 बुध 28/06/2039 केतु 31/08/2039	सूर्य 16/09/2039 चंद्र 14/10/2039 मंगल 02/11/2039 राहु 21/12/2039 गुरु 03/02/2040 शनि 26/03/2040 बुध 11/05/2040 केतु 31/05/2040 शुक्र 24/07/2040	चंद्र 08/09/2040 मंगल 10/10/2040 राहु 31/12/2040 गुरु 14/03/2041 शनि 09/06/2041 बुध 26/08/2041 केतु 27/09/2041 शुक्र 27/12/2041 सूर्य 23/01/2042	मंगल 15/02/2042 राहु 13/04/2042 गुरु 03/06/2042 शनि 03/08/2042 बुध 26/09/2042 केतु 19/10/2042 शुक्र 22/12/2042 सूर्य 10/01/2043 चंद्र 11/02/2043	गुरु 26/05/2043 शनि 26/09/2043 बुध 14/01/2044 केतु 29/02/2044 शुक्र 08/07/2044 सूर्य 16/08/2044 चंद्र 20/10/2044 मंगल 04/12/2044 राहु 31/03/2045
गुरु - शनि 31/03/2045 12/10/2047	गुरु - बुध 12/10/2047 17/01/2050	गुरु - केतु 17/01/2050 24/12/2050	गुरु - शुक्र 24/12/2050 24/08/2053	गुरु - सूर्य 24/08/2053 12/06/2054
शनि 25/08/2045 बुध 03/01/2046 केतु 26/02/2046 शुक्र 30/07/2046 सूर्य 14/09/2046 चंद्र 30/11/2046 मंगल 23/01/2047 राहु 11/06/2047 गुरु 12/10/2047	बुध 07/02/2048 केतु 26/03/2048 शुक्र 11/08/2048 सूर्य 21/09/2048 चंद्र 29/11/2048 मंगल 17/01/2049 राहु 21/05/2049 गुरु 08/09/2049 शनि 17/01/2050	केतु 06/02/2050 शुक्र 04/04/2050 सूर्य 21/04/2050 चंद्र 19/05/2050 मंगल 08/06/2050 राहु 29/07/2050 गुरु 13/09/2050 शनि 06/11/2050 बुध 24/12/2050	शुक्र 04/06/2051 सूर्य 23/07/2051 चंद्र 12/10/2051 मंगल 08/12/2051 राहु 02/05/2052 गुरु 09/09/2052 शनि 10/02/2053 बुध 28/06/2053 केतु 24/08/2053	सूर्य 08/09/2053 चंद्र 02/10/2053 मंगल 19/10/2053 राहु 02/12/2053 गुरु 10/01/2054 शनि 25/02/2054 बुध 08/04/2054 केतु 25/04/2054 शुक्र 12/06/2054

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

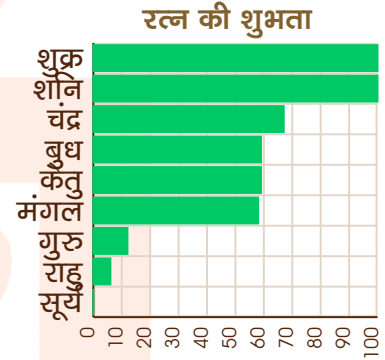
मूलांक	2
भाग्यांक	3
मित्र अंक	2, 7, 8, 3
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	100%	स्वास्थ्य, धन
मोती	चंद्र	67%	सन्तति सुख, दम्पति
पन्ना	बुध	59%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	59%	कम खर्च, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	58%	पराक्रम, सुख, धनार्जन
पुखराज	गुरु	12%	रोग, व्यय, पराक्रम हानि
गोमेद	राहु	6%	शत्रु व रोग
माणिक्य	सूर्य	0%	शत्रु व रोग, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	10/02/2025	0%	74%	70%	43%	25%	100%	100%	0%	66%
राहु	11/02/2043	0%	55%	41%	59%	12%	100%	100%	31%	44%
गुरु	11/02/2059	0%	74%	64%	43%	38%	98%	100%	6%	59%
शनि	11/02/2078	0%	55%	41%	65%	12%	100%	100%	19%	44%
बुध	11/02/2095	0%	55%	58%	72%	12%	100%	100%	6%	59%
केतु	12/02/2102	0%	55%	64%	59%	12%	100%	95%	0%	72%
शुक्र	12/02/2122	0%	55%	58%	65%	12%	100%	100%	19%	66%
सूर्य	12/02/2128	0%	74%	64%	59%	25%	98%	95%	0%	44%
चंद्र	12/02/2138	0%	80%	58%	65%	12%	100%	100%	0%	44%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097	02/05/2098-20/06/2098	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/11/2105-25/02/2108	29/07/2108-23/11/2108	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
शुभ
शुभ
अशुभ
अशुभ

क्षेत्र

सुख हानि
सन्तति सुख
शत्रु व रोग
दुर्घटना
कम खर्च

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है जिससे तृतीय भाव में मंगल की स्थिति प्रायः शुभ मानी जाती है। अतः इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्य कलापों को निर्भय होकर सम्पन्न करेंगी तथा इनमें आपको समय समय पर उचित सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आपको आवश्यक सुख एवं सहयोग मिलेगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करेंगी।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी। इसके प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी। परन्तु पित गर्मी या रक्त विकार आदि से आप यदा कदा शारीरिक कष्ट की अनुभूति कर सकती हैं। नवम भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में ही रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा आप कर्म करने पर अधिक विश्वास करेंगी। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगी यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अन्ततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगी। पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे एक आदरणीय पुरुष होंगे तथा सभी लोग उनसे प्रभावित रहेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ

ही पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा। जिससे उत्साह पूर्वक आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगी।



Astro barkha Kumari IIMT University Meerut

Ambika enclave ranchi
9304305446

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक यात्रा बहुत करता है पर आंशिक रूप में ही सफलता मिलती है। कभी रोग व्याधि जातक के शरीर में लग जाती है, जिसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति नाजुक हो जाती है। चन्द्रमा के प्रभावित होने के कारण जातक का जीवन मानसिक रूप से थोड़ा बहुत परेशान रहता है एवं शोक दुःख आदि भी घेर लेता है। जातक को प्रेम प्रसंग में विशेष रूप से सफलता नहीं मिलती है। मनोभिलाषित पत्नी प्रायः नहीं मिलती। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक का चरित्र थोड़ा सन्देहास्पद रहता है। जातक के मन में आंशिक रूप से निराशा की भावना जागृत हो उठती है और अपने मन में दूसरों के प्रति शत्रुता पालकर रखने वाला होता है। धर्म की आंशिक क्षति होती है। जातक कभी-कभी बुरा स्वप्न भी देखता है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक राजदण्ड का कभी भागीदार बन जाता है। जातक का जीवन शत्रुओं के षड्यन्त्र से घिरा रहता है और उस षड्यन्त्र में आंशिक रूप से शत्रुओं की विजय होती है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को थलसेना में नहीं जाना विशेष रूप से हितकर है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक एक अच्छा दलील देने वाला एवं वकालत करने वाला तथा राजनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।

12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड़्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- आपकी कुण्डली में नीचस्थ गुरु लग्न में है तथा उस पर शनि का प्रभाव है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में बुध और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान्, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य षष्ठ भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी अच्छी रहेगी। फिर भी यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूपेण अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपको कोई कष्ट न हो। साथ ही शत्रुवर्ग से भी आप का नित्य बचाव करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी नित्य करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर होंगे। परन्तु यदा कदा आपसी मतभेद भी रहेंगे जिससे कभी कभी आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु अल्प समय में ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप जीवन में अपनी ओर से उनका पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं किसी भी प्रकार से वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भृत्कष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्,

लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

वृष राशि में शुक हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराक्रमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(10/02/2025 - 11/02/2043)

राहु की महादशा 10/02/2025 को आरम्भ और 11/02/2043 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु षष्ठम भावम में स्थित है। राहु की दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगलदशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य-समस्या, छोटी यात्रा तथा अचानक परिवर्तन ओर छोटे भाई-बहनों से लाभ मिला होगा। राहु की इस दशा में आपको विरोधियों पर विजय, नौकरी में लाभ और स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएं होंगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु किसी अन्तर्दशा में स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप वातरोग, संक्रामक रोग, चर्मरोग, रक्त की समस्या, स्नायविक दुर्बलता आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आप जीवन में सन्तुलन अपनाकर उत्तम स्वास्थ्य का आनन्द लेंगे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको शत्रु और विरोधियों पर विजय और उनसे लाभ मिलेगा। सट्टे में भी लाभ हो सकता है। निवेश लाभदायक सिद्ध होगा। अदालती मामले मुकदमे में फैसला आपके हक में होगा। बारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप कुछ व्यय होगा। इसलिए उचित आर्थिक प्रबन्धन की आवश्यकता है। जीविका और व्यवसाय के लिए विज्ञान, विमान-उड्डयन, कम्प्यूटर-प्रोग्रामिंग, दवा, यातायात, ज्योतिष, रेडियोग्राफी आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, इग्स, एण्टीबायोटिक्स, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को लाभ, शत्रुओं पर विजय, सम्मान तथा सहयोगियों और वरिष्ठ कर्मचारियों का सद्भाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लाभ में वृद्धि और व्यापार का विस्तार होगा। आपके व्यवसाय और जीवन-वृत्ति में अच्छी प्रगति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आप अपने आवास में परिवर्तन कर सकते हैं। आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप जमीन-जायदाद की खरीद-बिक्री करेंगे। इस दशा के दौरान और खासकर मंगल की अन्तर्दशा के दौरान अक्सर छोटी यात्राएं होंगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान दूर की यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। आप को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। विज्ञान, दवा, विमान इंजीनियरिंग और सभी

बौद्धिक-कार्यों में आपकी रुचि होगी। राहु शनि की राशि में स्थित है, इसलिए आप गम्भीर विषयों के अध्ययन में रुचि लेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा कुछ परिवर्तन होगा। उन्हें आपकी सहायता व मार्गदर्शन की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी की अवांछित यात्रा, व्यय तथा कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। परिवार के साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको व्यवहार-कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता की छोटी यात्रा होगी, संबंधियों से सहायता तथा सुख की प्राप्ति तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा जबकि आपके पिता का तीर्थाटन होगा और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों का कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ तथा अप्रत्याशित विकास होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी विरोधियों पर विजय और मामूली स्वास्थ्य-समस्या होगी। गुरु की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद में वृद्धि, व्यापार में लाभ तथा शादी होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान उत्तम शिक्षा तथा बच्चों से सुख मिलेगा किन्तु, कुछ बाधा आ सकती है। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सफलता ओर सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, सम्पत्ति तथा समृद्धि होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में व्यय तथा दूर की यात्रा होगी। चन्द्र के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा जबकि मंगल अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या ओर परिवर्तन होगा।

**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(10/02/2025 - 24/10/2027)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/02/2025 को प्रारंभ होकर 11/02/2043 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 10/02/2025 को प्रारंभ होकर 24/10/2027 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठ भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। छठे भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के नवम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको कई बीमारियां हो सकती हैं, मन विचलित रह सकता है। किसी कांड में फंस सकते हैं, अतः प्रत्येक कदम पर सावधानी की आवश्यकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु गायत्री मंत्र के जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(24/10/2027 - 19/03/2030)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 10/02/2025 को प्रारंभ होकर 11/02/2043 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 24/10/2027 को प्रारंभ होकर 19/03/2030 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रूपरेखा आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। लग्न में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सुख-सुविधासंपन्न होंगे। व्यायाम करेंगे, जिससे शरीर हष्ट-पुष्ट रहेगा। उत्तम वस्त्र धारण करेंगे, प्रसन्नचित्त रहेंगे। यह अंतर्दशा आपके और आपके परिवार के लिए बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जाप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।

**अंतर्दशा :- राहु - शनि
(19/03/2030 - 23/01/2033)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 10/02/2025 को प्रारंभ होकर 11/02/2043 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 19/03/2030 को प्रारंभ होकर 23/01/2033 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रूपरेखा आदि का परिचायक है।

शनि को अशुभ ग्रह समझा जाता है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3, 7, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अधार्मिक विचारों के हो सकते हैं। स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है ; वायु से संबंधित व्याधियों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। उच्चाधिकारी आपसे रुष्ट हो सकते हैं, पद की हानि संभव है। प्रत्येक कदम सावधानी से रखना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं
- पीपल की जड़ में जल अर्पित करें
- भोजन की पहली रोटी गाय को दें